

इस दुनिया में जो कुछ हम अर्जित करते हैं, उससे नहीं, बल्कि जो कुछ त्याग करते हैं, उससे समृद्ध बनते हैं।
- हैनरी वार्ड बीयर

अच्छी सोच

शिद्दत से कर्म करें तो मांगना नहीं पड़ता

बहुत साल पहले की बात है, शायद उस समय की, जब दिल्ली में ट्राम चलती थी। इक्की-दुक्की गाड़ियां ही सड़क पर दिखाई देती थीं। पांच या दस किमी दूर जाना पूरे दिन का कार्यक्रम लगता था। जब समय अधिक था सुविधाएं कम थीं। उन दिनों जब संबंध जरूरी थे, चाहते जरूरी नहीं थीं। उन दिनों में जब मेहमान वास्तव में अतिथि होते थे। उस समय के नौजवान से अगर पूछा जाता कि बात तेरी चाहत क्या है? तो वह नौजवान शायद बोलता कि घर में नल लग जाए, रोशनी आ जाए, स्टोव मिल जाए, काले रंग का मोटा वाला फोन मिल जाए इत्यादि। उस समय के मनुष्य की कल्पना में दूर-दूर तक उन वस्तुओं का विचार नहीं था, जो आज वह भोग रहा है। वक्त के गर्भ में क्या छिपा है कोई नहीं जानता। तीस साल पहले यदि आपसे पूछा जाता कि आपको किन वस्तुओं की चाहत है? आप शायद वे वस्तुएं बताते, जो आज के संदर्भ में निर्मूलत हो गई हैं। आप लिखते- मुझे वीसीआर मिल जाए, कैसेट प्लेयर मिल जाए, घर में कूलर लग जाए इत्यादि।



आचार्य शिवेंद्र नाथ विवेक निवेशन एजुकेशनल ट्रस्ट

वक्त के चक्र को और आगे बढ़ाकर आज के नौजवान से पूछें कि बात! तेरी चाहत क्या है? तो चाहतों के पिटाटे से जो निकलेगा वो शायद आप और मैं सोच भी न पाएं। परंतु बहुत बड़ी विडंबना है कि वो जो चाहता है कुदरत उससे और ज्यादा दे देगी। सौ बातों की एक बात यह है कि हमारी मुट्टी बहुत छोटी है परंतु परम पिता की मुट्टी बहुत विशाल है। उदाहरण के लिए आपने अपने बच्चे के भविष्य के लिए बहुत योजनाएं बना रखी हैं। उसके भविष्य में होने वाले खर्चों के लिए बैंक में एफडी कर रखी है, पर उसे वक्त आने पर ही बताएंगे। भविष्य के गर्भ में क्या होने वाला है वह बच्चा अभी समझ नहीं सकता। किंतु पिता उस घटना के लिए अभी से तैयारियां करनी शुरू कर देता है। बच्चे का कर्तव्य कर्म करना है। जो बच्चा कर्तव्य कर्म को पूरी शिद्दत से करता है उसे कुछ मांगना नहीं पड़ता। उसकी सारी जरूरतें पिता सहज पूरी कर देता है। परंतु जो बच्चा अपने कर्तव्य कर्म से विमुख होकर अपनी कामनाओं का वशीभूत हुआ इधर-उधर भटकता है वह निम्न गति (पतन) की तरफ जाता है। आप और मैं अपने कर्तव्य कर्म को अगर पूरी शिद्दत से करें तो हम सोच भी नहीं सकते कि हमारा भविष्य क्या-क्या लेकर आएगा? वक्त के गर्भ में क्या छिपा है यह कोई नहीं जानता। सोचिएगा इस बात पर!



डॉ. अनिल जोशी हिमालय में पिछले 30 सालों से संरक्षण का कार्य कर रहे पर्यावरणविद

एक इलाके के पेड़-पौधे बड़े होते, चरम पर पहुंचते हैं और फिर उनकी जगह दूसरे पेड़-पौधे आते हैं। जैसे पुराने जमाने में राजा की जगह उसके उत्तराधिकारी लेते थे। हमने इसी ज्ञान का उपयोग संरक्षण में किया है।

उत्तराखंड के पौड़ी जिले के कोटवाडा-दुगड़डा रोड पर 21 जगह भूस्खलन का खतरा रहता था, लोग मरते थे, यातायात रुक जाता था। सूक्ष्म स्तर पर काम करके 17 जगहों पर अब खतरा नहीं रहा।

भारत दुनिया के गिने-चुने देशों में से एक है, जिसे प्राकृतिक संसाधनों का असली वरदान प्राप्त है। हिमालय से लेकर समुद्र तक और मरुस्थल से लेकर दलदली क्षेत्र तक यह देश विशिष्ट परिस्थितियों का धनी है। इन सभी में हिमालय को सबसे ऊंचा स्थान मात्र इसकी ऊंचाई के लिए नहीं बल्कि इसकी राष्ट्रसेवा के लिए प्राप्त है। हिमालय देश के नौ राज्यों और कुल भूमि के 17 प्रतिशत क्षेत्र में फैला है। इसका 67 प्रतिशत भू-भाग वन भूमि के लिए सुरक्षित है। खेती मात्र 13 प्रतिशत भूमि पर ही संभव है। देश का जल बैंक कहलाने वाला हिमालय 65 फीसदी आबादी को पानी देता है और उसकी रोजी-रोटी से जुड़ा है। ऐसा हिमालय पर्यावरण विनाश की चपेट में आकर प्राकृतिक आपदाओं के जरिये हमें खारे के संकेत दे रहा है।

स्थिति विकट तो है, लेकिन उम्मीद के कारण भी हैं। जब हम नदियों, पहाड़ों, जंगलों आदि के संरक्षण के जरिये पर्यावरण बचाने की बात करते हैं तो यह प्रयास अंततः विफल ही होते हैं। हमें इसमें उस आबादी को भी जोड़ना होगा, जो इस पर निर्भर है। प्रकृति के निकट रह रहे लोग उसे बहुत अच्छी तरह समझते हैं। पर्यावरण विनाश और नतीजतन रोजी-रोटी के साधन न होने से हिमालय के कई गांव उजड़ें हैं। गांव उजड़ते हैं तो प्रकृति की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता और निहित स्वार्थी तत्व संसाधनों के शोषण में लग जाते हैं।

हमने इसी सोच को आधार बनाकर हिमालयीन पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण संगठन (हेस्को) के जरिये हिमालय को सहेजना शुरू किया। बड़े पैमाने पर जंगलों का विनाश, सड़कों का निर्माण और खनन के कारण भू-स्खलन और मिट्टी का क्षरण जैसी बड़ी समस्याएं जन्मीं। मिट्टी-पानी हिमालय की मूल धरोहर है। अनुमान है कि हर साल मिट्टी के साथ 51 लाख टन मूल्यवान पोषक तत्व बह जाते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह 7 अरब रुपए का सालाना नुकसान है। हमने यहीं से शुरुआत की।

हेस्को के अध्ययन में हमने पाया कि एक इलाके के पेड़-पौधे बड़े होते, चरम पर पहुंचते हैं और फिर वे खत्म होते हैं, लेकिन उनकी जगह फिर दूसरे पेड़-पौधे आते हैं। यह ठीक वैसा ही जैसे पुराने जमाने में राजा की जगह उसके उत्तराधिकारी लेते थे। किंतु जब बहुत ज्यादा कटाई-चराई होती है, तो इस परंपरा में दूसरे पौधे उग आते हैं, जो स्थानीय



भले ही हो पर पर्यावरण की दृष्टि से मूल्यवान नहीं होते। ये नए पौधे अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग तरह के होते होते हैं। हालांकि, इन्हें संरक्षण दिया जाए तो उत्तराधिकार की नई परंपरा शुरू हो जाती है।

भूस्खलन रोकने के लिए हमने इसी ज्ञान का उपयोग किया। पेड़ों के चुनाव में मिट्टी की नमी की कम जरूरत और प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने की क्षमता का ध्यान रखा। झाड़ियों का पर्यावरण में ऊंचा स्थान है। एक तो उनमें प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने की अद्भुत क्षमता होती है। वह वहीं पाई जाती हैं, जहां मिट्टी कमजोर हो। बड़े होने में वक्त कम लगता है। काटने पर बढ़ जाती है और जड़ें बहुत गहरी जाती हैं। फिर आती है घास। यह मिट्टी को बचाने में बहुत उपयोगी है। सालभर विभिन्न जलवायु में उगाई जा सकती है। जड़े सतह पर खूब फैलती हैं और गहराई में उतरकर भी चारों तरफ फैलती हैं। इस तरह वह मिट्टी को अच्छी तरह बांध देती है। बुरी तरह चराई होने पर भी घास फिर उग आती है, क्योंकि जमीन के भीतर जड़े बनी रहती हैं। जैसे कांस बोल्टों वाली हरियाली रहित जमीन में अच्छी उगती है। इसके बाद क्रमशः अन्य घास उगाकर हरियाली बढ़ाई जाती है। उत्तराखंड के पौड़ी जिले के कोटवाडा-दुगड़डा रोड पर 21 जगह भूस्खलन का खतरा रहता था, लोग मरते थे, यातायात रुक जाता था। वहां इसी तरह मिट्टीको मजबूती दी गई और अब 17 जगहों पर कोई खतरा नहीं है। चार जगहों पर बहुत तीखी ढलान थी और इसलिए वहां मैकेनिकल प्रयासों की जरूरत थी। इसे पीछे रखकर ही हमने प्रयास किया कि पेड़ों की कटाई के बाद हरियाली हटती है तो खपतवायु व निरुपयोगी पौधे उग

जाते हैं। ये तेजी से फैलते हैं। खेती की जमीन बर्बाद करते हैं। पशुओं के लिए विषैले होते हैं। इन्हें नष्ट करना लगभग नामुमकिन है। पश्चिमी हिमालय में लैंटाना नाम का पौधा ऐसा ही था। हमने इनके उपयोग का रास्ता निकाला। लोगों को इससे सस्ता फर्नीचर, रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजें, आरबत्ती बनाने, पतियों से मच्छर भगाने की दवा बनाने और सबसे बड़ी बात इसके बायोमास से ईंधन बनाना सिखाया। स्थानीय लोगों को रोजगार का जरिया मिलने पर लैंटाना पर काबू पाना आसान हो गया।

तीसरी-चौथी शताब्दी से करीब दो लाख घरट (वॉटर मिल) का उपयोग हिमालय में होता रहा है। इनका उपयोग चावल, मक्का पीसने या तेल निकालने में होता रहा है। किसी ने इनसे बिजली बनाने के बारे में नहीं सोचा। डीजल व बिजली से चलने वाले उपकरण आए तो घरट धीरे-धीरे बेकार हो गए। हमने परंपरा व लकड़ी हटाकर उतमों में धातु के टर्बाइन डालकर उनमें बेयरिंग डाले और उनकी क्षमता तीन गुना बढ़ गई। इनसे 15 किलो वाट तक बिजली पैदा होती है, जिन्से 100 घरों में रोशनी की जा सकती है। ये एक घंटे में एक किलो कार्बन प्रदूषण बचाता है। ये लेथ मशीनों के लिए भी उपयोगी है, जिन्से रोजगार पैदा होता है। विशाल पनबिजली योजनाएं हिमालय को नुकसान पहुंचाती हैं, लोगों को भी जड़ों से उखाड़ देते हैं।

फिर हमने खेती पर विचार किया। पाया कि इसमें ज्वार, बाजरा, मक्के जैसे मोटे अनाजों की अनेकखी की गई, जबकि ये इल्लोअिजकल फसलें हैं। अत्यधिक वर्षा से लेकर सूखी जमीन तक में ये उगाई जा सकती है। कई प्रकार की मिट्टी में ये उग जाती हैं। इनमें पोषक तत्व ज्यादा होते हैं और इनमें रोग व कीटों का प्रकोप बहुत कम होता है। कीटनाशकों की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती। इनमें भरपूर फाइबर होता है। पाचन के दौरान ब्यंड शुगर धीरे-धीरे रिलीज होती है और ये कॉलेस्टेरॉल को कम करते हैं। हेस्को के प्रयासों से चमौली-रुद्रप्रयाग में कई परिवार फिर मोटे अनाज की खेती पर लौट आए हैं। कुल-मिलाकर हमारा अनुभव है कि इतने सूक्ष्म स्तर पर प्रयास कर पर्यावरण को इसके मूल स्वरूप में लौटाना संभव है, लेकिन हमारे ये प्रयास बहुत थोड़े हैं। यह समस्या हिमालय की तरह ही विशाल है पर यह काम भी असंभव नहीं है। सारे देश को हिमालय से फायदा होता है, इसलिए पूरे देश को ही इस काम के लिए आगे आना होगा।

खुशी के रंग



बच्चे खुश होते हैं, तो हमारा मन भी प्रसन्न हो जाता है। पोप फ्रांसिस के साथ भी ऐसा ही है। वे वेटिकन में पार्थना के बाद आम लोगों से मिलने के लिए उनके बीच जाते हैं। हाल ही में वे क्यूबा यात्रा पर निकलने के पहले आम लोगों से मिल रहे थे, तभी यह बच्चा करीब आया तो पोप ने उसे गोद में उठा लिया। पोप और उनके बीच ऐसी बातचीत हुई कि दोनों मुस्करा दिए और फोटोग्राफर ने भीड़ के बीच इस दृश्य को फोटो बना दिया।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

ये पायलट आईएस के ठिकानों पर बरसाते हैं बम

अमेरिकी वायुसेना, नौसेना के साथ आईएस के ठिकानों पर हवाई हमले कर रही है। उसके पायलट इराक और सीरिया में एक साल में 4,700 से अधिक हवाई हमले कर चुके हैं। वे पहले आईएस की पुख्ता लोकेशन ढूंढते हैं ताकि आम लोगों की जान न जाए। बाहरी दुनिया में इन्हें कोई नहीं जानता। कौन हैं ये, जानिए-

• हेलेन कूपर, फारस की खाड़ी में तैनात युद्धपोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट से

अमेरिका का शक्तिशाली युद्धपोत अगस्त 2014 से पारस की खाड़ी में तैनात है। उसका मिशन सीरिया और इराक में आईएस के ठिकानों पर बमबारी करना है। अमेरिकी नौसेना के प्रतिभाशाली पायलट इस कार्य में जुटे हैं। एफ/ए-18 सुपर हॉर्नेट्स विमान को युद्धपोत से एक बार निकलने के बाद छह-साढ़े छह घंटे उड़ान भरनी होती है। उनके लिए बड़ी चुनौती आम नागरिकों को हमले से बचाना है। मैं नेवी लैफ्टिनेंट माइकल स्मेलवूड (कोडनेम बोन्स) का उदाहरण देती हूँ। वे शानदार पायलट हैं। एक बार उन्होंने और उनके रूममेट नेवी लैफ्टिनेंट निक स्मिथ (कोडनेम थिप थिप) ने एकसाथ उड़ान भरी। कुछ देर बाद ले. स्मिथ के विमान के इंजन में खराबी आई, वह तेजी से नीचे आने लगा। ले. स्मेलवूड ने अपने साथी को वापस युद्धपोत पर ले जाने का प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हुए। थोड़ी देर में ले. स्मिथ ने खुद को विमान से बाहर किया (इजेक्ट) और 390 करोड़ रुपए का विमान समुद्र में क़ैश हो गया। करीबी मित्र के साथ हदसे के बावजूद ले. स्मेलवूड ने उड़ान पूरी की।

© The New York Times

हर उड़ान जीने की होती है चाहत, पता नहीं कब वह आखिरी हो

 <p>नेवी में इन्हें यार्ड सेल के कोड नेम से जाना जाता है।</p> <p>मेरे पिता नेवी पायलट थे। मैं उड़ानों के वातावरण में ही बड़ा हुआ। जब 6 साल का था, तब पिता मुझे एक एयर-शू में लेकर गए थे। उसके बाद महसूस होने लगा कि मेरा जन्म फाइटर पायलट बनने के लिए ही हुआ है, किसी अन्य काम के लिए नहीं।</p>	 <p>कायल विल्सन मरीन कैप्टन</p> <p>कोड नेम बेटी</p> <p>मैं जब युवा हो रहा था, तभी से एरिफ़रेशन के प्रति आकर्षित हूँ। मेरे दादा दूसरे विश्वयुद्ध में बी-17एस विमान उड़ाते थे। आज भी मैं उनके जैसा बनने, उनका अनुसरण करने की कोशिश करता हूँ। उड़ान के दौरान मैं कॉस वाला छोटा पैडल और ईगल ग्लोब पहनता हूँ।</p>	 <p>तेनियर विशाप मरीन कैप्टन</p> <p>कोड नेम पोप</p> <p>मेरी मां नेक दिवारों वाली महिलाओं में से एक थीं। उनके इस दुनिया से चले जाने के पहले से हर उड़ान के दौरान मैं उनकी फोटो वाला नेटवर्क पहनता हूँ। इससे मुझे हिम्मत मिलती है। इसके अतिरिक्त मेरे पास वह सभी सामान होते हैं, जो आपात स्थिति में जरूरी होते हैं।</p>
 <p>विलियम मिशेल मरीन मेजर</p> <p>कोड नेम स्कल</p> <p>अगर उड़ान में हवा मेरे विंग्स से नीचे होती है, तो नापसंद करने जैसा कुछ नहीं होता। मैं प्रत्येक उड़ान से प्रेम करता हूँ, क्योंकि आप नहीं जानते कि कब वह आरिचरी हो सकती है। आज भी मुझे वही हेलमेट बेग दिया जाता है, जो फ्लाइट स्कूल के दिनों में मिलता था।</p>	 <p>क्रिस गॉल्ट नेवी वीपन ऑफिसर</p> <p>कोड नेम जैक्सोस</p> <p>अगर आप कूज पर होते हैं, तो साइकिल से उसमें कई चक्कर लगा सकते हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी होती है कि ऐसे लोग सही होते हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही है। उड़ान पर मैं अपना 'खराब तौलिया' ले जान नहीं भूलता, पता नहीं क्यों वह मुझे अच्छा लगता है।</p>	 <p>ले. माइकल रमालवूड नेवी वीपन ऑफिसर</p> <p>कोड नेम बोन्स</p> <p>हम यह लड़ाई खत्म करने की ओर हैं, लेकिन अभी यह जारी है। उड़ान के दौरान हमें जानकारी नहीं होती कि अगले छह-साढ़े छह घंटे हमारे साथी कितनी जोरियम का कार्य करेंगे। मैं तैनाती के दौरान हमेशा अपने सूट की पैकेट में पत्नी और बच्चे की फोटो रखता हूँ।</p>

तो ये करें..

निराशा से निकलना जब मुश्किल हो जाए

निराशा नुकसानदायक ही होती है। फिर चाहे मामला रिश्ते का हो या करिअर को आगे बढ़ाने का बड़ा मौका खो देने का। निराशा कैसी भी हो यह उतनी बुरी नहीं होती, जितनी दिखाई देती है और इससे निकलने के जितने तरीके आप सोच सकते हैं, उससे ज्यादा मौजूद होते हैं।

रचनात्मक काम करने से खुद को दें नई प्रेरणा खानपान में आयरन वाले खाद्य पदार्थ शामिल करें

1. रचनात्मकता निराशा से उबारती है। कलाकारों ने प्रायः निराशा से निकलने के प्रयास में प्रेरणा पाई है। कोई गीत गाएँ, कोई गीत रचें, चित्र बनाएँ, चैस जैसे खेल खेलें। किचन में हाथ आजमाएँ, दैनिक कार्यों में ऐसी रचनात्मकता भी निराशा से उबार देती है।
2. किसी को दोष देना बंद करें। स्थिति का वास्तविक धरातल पर विश्लेषण करें। किसी काम में विफलता से निराशा उपजी हो तो देखें कि क्या प्लान गलत था? अपेक्षा अनुचित थी? सोचें कि सीख क्या मिली?
3. आपकी योजना काम नहीं आई तो नई योजना बनाएँ, जैसे समुद्र में जहाज के सामने अचानक आने वाली अड़चनों के कारण आधी रात को पहले से तय रास्ता बदलना पड़ता है।

1. जिस परिस्थितियों में निराशा उपजी है, उससे गुजर चुके लोगों से सलाह लें। वे जरूर ऐसी स्थिति का कोई न कोई उजला पक्ष बताएंगे।
2. नए दोस्त बनाएँ, नए लोगों से मुलाकात करें। नए परिचय से नए विचार मिलते हैं, नई राह नजर आती है और नए अवसर भी सामने आते हैं।
3. कई बार शरीर में आयरन (लौह तत्व) की कमी से निराशा पैदा होती है। ज्यादा काम करने, व्यायाम या खेल के दौरान ज्यादा पसीना बहने से भी आयरन की कमी हो सकती है। पालक और सूखे मेवे को भोजन में शामिल करें। इनमें आयरन अधिक होता है। साथ में संतरे का रस भी लें तो और भी अच्छा। यह आयरन को तेजी से जल्म करने में मदद करता है।

व्यायाम करके शरीर में फील गुड रसायन बढ़ाएं

1. सब्जियां, फल, सूखे मेवे, फलियां ज्यादा लें। इससे ब्यंड सर्कुलेशन में सुधार होता है और एंटीऑक्सीडेंट्स मिलते हैं, जो निराशा दूर करते हैं।
2. नियमित व्यायाम करें, जिससे शरीर में सेरोटोनिन जैसे फील गुड रसायन निकलते हैं और रोग प्रतिरोधक प्रणाली को नुकसान पहुंचाने वाले रसायन घटते हैं।
3. निराशा एकमात्र ऐसी भावना है, जिसमें दो न्यूरोट्रांसमीटर निकलते हैं- ग्लुटामेट और गामा एमिनोब्यूटीरिक एसिड (जीएबीए)। जीएबीए की तुलना में ग्लुटामेट ज्यादा हो तो निराशा अधिक और जीएबीए की तुलना में ग्लुटामेट कम हो निराशा कम। स्वस्थ खानपान से ग्लुटामेट कंट्रोल कर निराशा पर काबू पाया जा सकता है।

अब सायबर हमले रोकने के लिए होगा समझौता

• डेविड ई. सेन्जर, चीफ वॉशिंगटन कॉर्रेस्पॉन्डेंट

अमेरिका आरोप लगाता है कि चीन उसकी इंटरनेटकुअल प्रॉपर्टी की साइबर जासूसी कर रहा है। इसमें ऊर्जा संयंत्र, बैंकिंग सिस्टम, सेलफोन नेटवर्क, अस्पताल एवं रक्षा प्रतिष्ठान शामिल हैं। अब लंबे दौर की बातचीत के बाद दोनों देश अपने-अपने सायबर स्पेस को विवादों से दूर रखने के लिए समझौते के निकट आ गए हैं। इसमें प्रमुखता से यह बात शामिल है कि कोई भी देश शांति समय में सर्वप्रथम अपनी तरफ से किसी के क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर (महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे) को नुकसान पहुंचे। चीन के राष्ट्रपति शी जिन्पिंग गुआरर का वॉशिंगटन पहुंच रहे हैं। इसके ठीक पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने व्यापार समूह की बैठक में संकेत दिया कि वे चीनी समकक्ष के साथ 'कुछ महत्वपूर्ण' कर सकते हैं। इसमें साइबर स्पेस पर समझौता प्रमुख है। दोनों देश इससे प्रति उत्सुक हैं। ओबामा मानते हैं कि अगर अमेरिका-चीन इस विषय पर संशुद्ध होते हैं, तो अन्य देश भी आगे बढ़ेंगे। पहली बार कोई देश ऐसा करने जा रहा है। वॉता से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्पष्ट किया कि ओबामा और जिन्पिंग की बयान में स्पेसिफिक या इंटेल् में कोई जानकारी नहीं देंगे। क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमले रोकने जैसी कोई बात बयान में नहीं होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि दोनों देश

संयुक्त राष्ट्र में पिछले दिनों में पारित सायबर स्पेस के 'कोड ऑफ कंडक्ट' का पालन करेंगे। इसके सिद्धांतों में साफ कहा गया है कि किसी भी देश को यह छूट नहीं देनी चाहिए कि वह अन्य देश के ऐसे क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचाए, जिसकी सेवाएं जनता को मिलती हों। अमेरिकी प्रशासन के एक अन्य अधिकारी ने कहा- इस बात की संभावना कम है कि नए समझौते में हाल के दिनों में चीन से किए गए सायबर हमलों का कोई उल्लेख हो। इन हमलों का उद्देश्य अमेरिका की इंटरनेटकुअल प्रॉपर्टी में संघ मारना होता है। समझौता होता है, तो उसमें 2.2 करोड़ निजी सुरक्षा फाइलों की ऑनलाइन चोरी रोकने पर बात नहीं होगी। राष्ट्रीय खुफिया विभाग के डायरेक्टर जेम्स आर. क्लेपर खुदा अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने व्यापार समूह वॉरियर को इस समझौते पर संदेह है। उन्हें नहीं पता कि जरूरत पड़ने पर वॉरटाइम अटैक कैसे करेंगे। जबकि चीनी अक्षी तरह जानते हैं कि अमेरिकी नेटवर्क मानते हैं कि अगर अमेरिका-चीन इस विषय पर संशुद्ध होते हैं, तो अन्य देश भी आगे बढ़ेंगे। पहली बार कोई देश ऐसा करने जा रहा है। वॉता से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्पष्ट किया कि ओबामा और जिन्पिंग की बयान में स्पेसिफिक या इंटेल् में कोई जानकारी नहीं देंगे। क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमले रोकने जैसी कोई बात बयान में नहीं होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि दोनों देश

© The New York Times